मोरंगे

मार्च–अप्रेल 2025

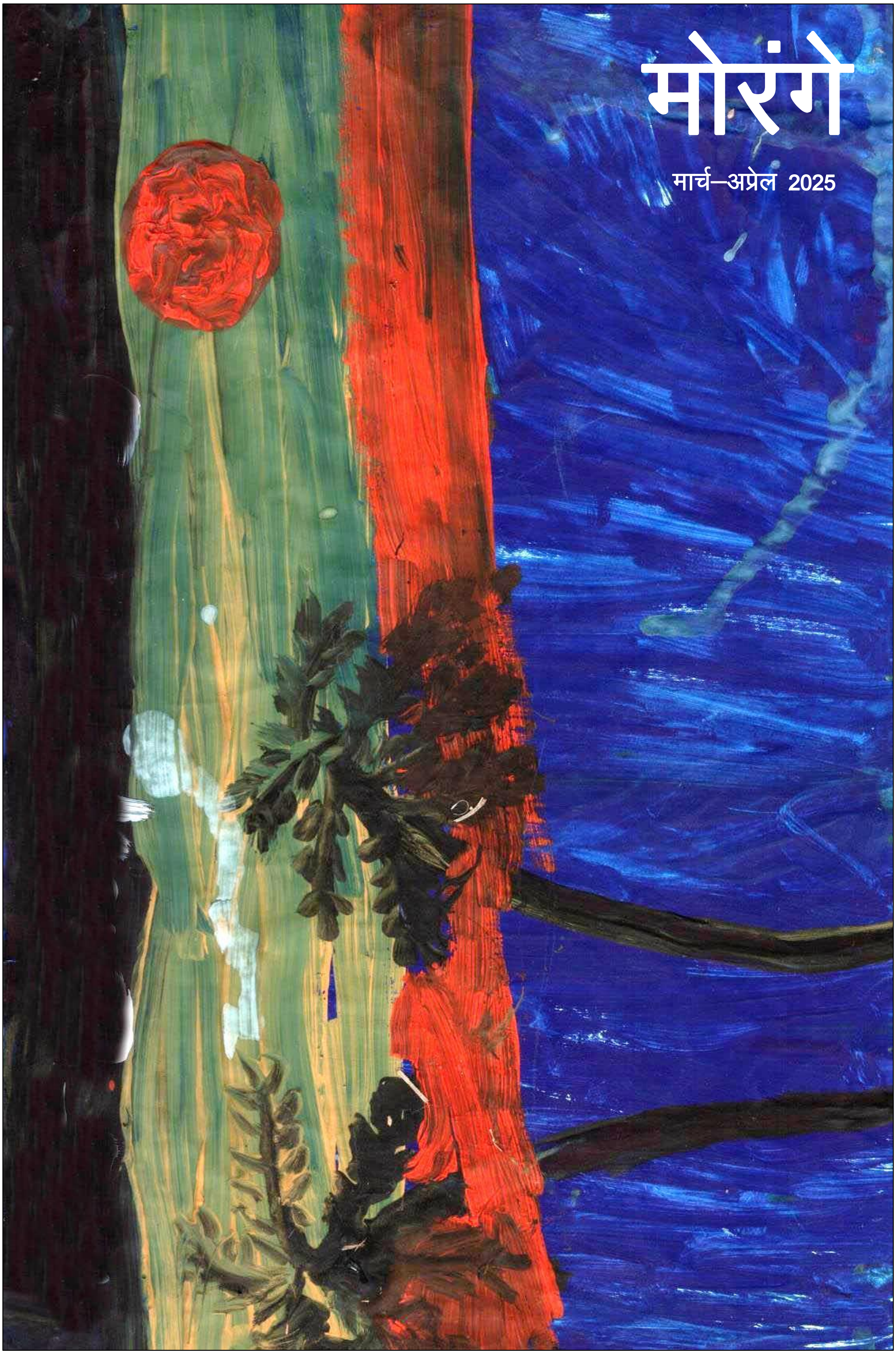

अनुक्रम

गीत कविताएँ

पंख
मेमना
चींटा चींटी की शादी
दीमक
घोड़ी
पीछे छूटे खेत

कहानियाँ

चिड़िया और जामुन का पेड़
गिलहरी और भालू
ऊँदरा ऊँदरी

याद की धूप छाँव में

गेहूँ कटाई वाले दिन
लकड़ियों के गट्ठर के पास बाघ
अमरूद का बगीचा

बात लै चीत लै

राजा की बकरियाँ
सियार का न्याय

प्रतिज्ञा ढोली, कक्षा–5, फैलोशिप सेंटर रांवल

सम्पादन : प्रभात
डिज़ाइन : लोकेश राठौर
वितरण : अंकुश शर्मा
आवरण चित्र : कृष्णा नायक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार
वर्ष 16 अंक 177–178

प्रबंधन
विष्णु गोपाल
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
एच–1, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर कॉलोनी, मानटाऊन, सवाई माधोपुर, राजस्थान
322001

yatra foundation AUSTRALIA
'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

गीत कविताएँ

पंख

एक तारा
दो तारा
तारा गया बाड़ में
बाड़ ने मुझे काँटा दिया
काँटा मैंने को चूल्हे को दिया
चूल्हे ने मुझे राख दी
राख मैंने कुम्हार को दी
कुम्हार ने मुझे घड़ा दिया
घड़ा मैंने कुँए को दिया
कुँए ने मुझे पानी दिया
पानी मैंने मोर को दिया
मोर ने मुझे पंख दिया
पंख लेकर मैं मामा के गया

प्रस्तुति –**बबीता बावरी**
रूपांतर – **प्रभात**

सुमन सैनी, समूह–खूशबू, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

मेमना

मेमना छोटा था कुछ ज्यादा
शैतानी करता बहुत ज्यादा
शैतानियों से उसका मालिक
दुखी हो जाता बहुत ज्यादा
पकड़ने उसे भागता
पर वो हाथ न आता
अगर हाथ आ जाता
चिल्लाता बहुत ज्यादा
मालिक लड़ता बहुत ज्यादा
मेमना चुप होता बहुत ज्यादा
पर उसको जक नहीं पड़ती
उठकर बाहर आता
बाहर आकर इधर उधर
भागता बहुत ज्यादा

लक्ष्मी बैरवा, कक्षा–10, श्यामपुरा।

विनोद प्रजापत, उम्र–11 वर्ष, समूह–सूरज

चींटा चींटी की शादी

शादी छी चींटा चींटी की
पाँच मई का फंक्शन छा
गुड़ शक्कर की बणी पापड़ी
और रायता मेल्या छा
डांस कर्‌यौ छौ खुद चींटा नं
चक्कर खाकर गिरग्यौ छौ
लेकर भाग्या अस्पताल मं
ठीकठाक भी होग्यौ छौ
घर नं आतां आतां वानै
पाँच सुबै का बजग्या छा
आधा बराती बैठ्या छा
आधा बराती सोग्या छा

राधिका महावर, कक्षा–6, अल्लापुर।

दिलराज मीना, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

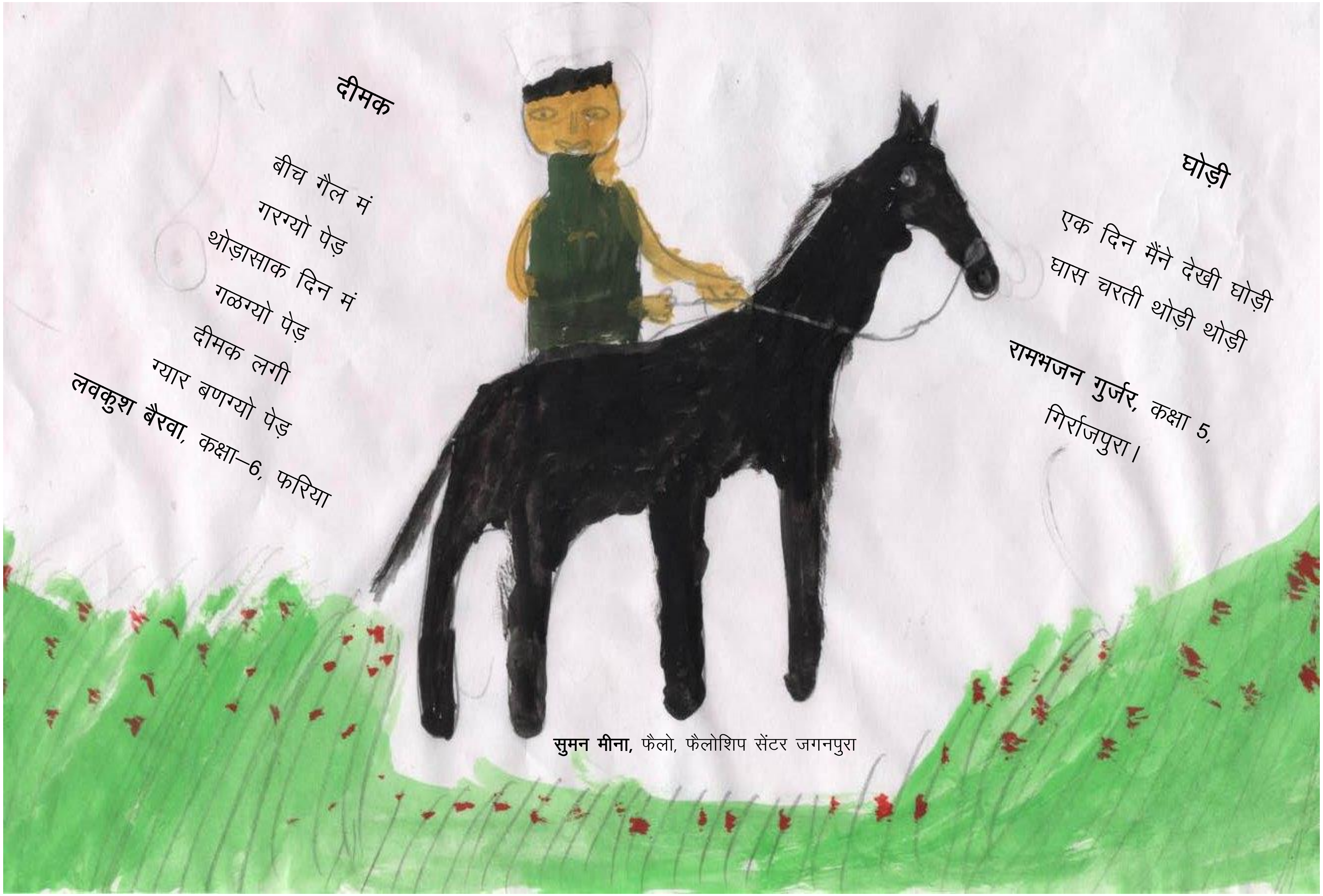

दीमक

बीच गैल मं
गरग्यो पेड़
थोड़ासाक दिन मं
गळग्यो पेड़
दीमक लगी
ग्यार बणग्यो पेड़

लवकुश बैरवा, कक्षा–6, फरिया

घोड़ी

एक दिन मैंने देखी घोड़ी
घास चरती थोड़ी थोड़ी

रामभजन गुर्जर, कक्षा 5,
गिर्राजपुरा।

सुमन मीना, फैलो, फैलोशिप सेंटर जगनपुरा

कहानियाँ

चिड़िया और जामुन का पेड़

एक जंगल में दो पेड़ थे। एक आम का पेड़ और एक जामुन का पेड़। एक दिन जामुन के पेड़ के पास एक चिड़िया अपनी बच्ची को लेकर आयी। चिड़िया बोली–'मैं यहाँ घोंसला बनाना चाहती हूँ।'

जामुन का पेड़ बोला–'नहीं, मैं अपने ऊपर घोंसला नहीं बनाने दूँगा।'

फिर चिड़िया नीम के पेड़ के पास गई। बोली–'मैं यहाँ घोंसला बनाना चाहती हूँ।'

आम का पेड़ बोला–'तुम मेरे डालों में कहीं भी घोंसला बना सकती हो।'

चिड़िया ने नीम के पेड़ में घोंसला बना लिया।

कुछ दिन बाद बहुत तेज आँधी आई। जामुन के पेड़ की बहुत सी डालें टूट गई। यह देखकर चिड़िया जामुन के पेड़ के पास आई। जामुन के पेड़ ने चिड़िया से कहा–'मैं जानता था एक दिन आँधी आएगी और मैं टूट जाऊँगा। इसलिए मैंने तुम्हें अपनी डालों में घोंसला नहीं बनाने दिया।'

चिड़िया को जामुन के पेड़ की बात समझ में आ गई। अब कहीं से आती तो नीम के पेड़ के अपने घोंसले में जाने से पहले जामुन के पेड़ से जरूर मिलने जाती।

आराधना मीना, कक्षा–4

सुमन मीना, फैलो, फैलोशिप सेंटर जगनपुरा

गिलहरी और भालू

एक बार एक गिलहरी थी। वह अपने मालिक के पास जा रही थी। उसको रास्ते में एक भालू मिला। भालू ने बोला कि 'तुम कहाँ जा रही हो ?

गिलहरी ने कहा–'मैं अपने मालिक के पास जा रही हूँ।'

भालू ने बोला कि 'मैं तुम्हारे साथ चलूँ क्या ?'

गिलहरी ने बोला–'चलो।'

फिर वे दोनों चले। फिर मालिक के पास पहुँच गए।

मालिक ने कहा कि 'ये कौन है?'

गिलहरी ने कहा कि 'ये मुझे रास्ते में मिला था।'

मालिक ने बोला कि 'इसके मम्मी पापा कहाँ हैं?'

गिलहरी ने कहा–'मुझे पता नहीं है।'

मालिक ने बोला–'इससे पूछो इसके मम्मी पापा कहाँ है?'

'कहाँ है?'– गिलहरी ने पूछा।

भालू ने बोला कि 'मेरे मम्मी पापा मेरे पास सोते थे। फिर वो अचानक गायब हो गए।'

मालिक ने कहा 'कोई बात नहीं। तुम हमारे साथ रहो।'

भालू अब उनके साथ रहने लगा।

अंकिता सैनी

ऊँदरा ऊँदरी

एक ऊँदरो और ऊँदरी हिया। वे कोई का घर में गेहूँ खाबा गिया। वहाँ ऊँदरा नं ऊँदरी कू देखी ही। ऊँदरा कै वा ऊँदरी पसंद आगी। दोनूं नं कोर्ट मैरिज कर ली।

फेर एक दिन ऊँदरो काम पै गियो हो। वा शाम की वापिस आयौ। ऊँदरी नं रोटी नीं बणायी ही। और वा मेकअप करर बैठी ही। वा ऊँदरा कू गुस्सो आ गियो। वानै ऊँदरी कै थप्पड़ दे पाड़ी। ऊँदरी पढ़ी लिखी ही। वानै पुलिस बुला ली। पुलिस ऊँदरा कू पकड़र लेगी। फेर दूसरै दिन पुलिस ने ऊँदरा कू छोड़ दियो।

ऊँदरा कू जोर को गुस्सो आ रियो हो। वानै आते ही फेर लड़ाई कर ली। ऊँदरी नै खी– 'नीं बणाऊँ रोटी। कर लै कांई करै जे।' और अस्यां कैर वा तो खाट पै बैठगी।

ऊँदरा नै सोची जादा काँई कवैंगा तो फेर पुलिस बुला लेगी। अब ऊँदरा कू ही रोटी बणाणी पड़ री ही।

खुशी हरिजन, कक्षा –6, बोदल, सवाई माधोपुर।

सोनम, कक्षा–3, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

याद की धूप छाँव में

गेहूँ कटाई वाले दिन

मेरी मम्मी हमारे खेत पर गेहूँ काट रही थी।

मूर्ति की मम्मी उनके खेत में से आ गई थी। मेरी मम्मी नहीं आई थी। मूर्ति की मम्मी हमारे डोल पर नहाने आ गई थी। मैंने सोचा कि मेरी मम्मी को बुलाने जाती हूँ। पर मेरी मम्मी तो हमारे डूँगर पर होकर आ गई थी। मुझे पता नहीं था कि मेरी मम्मी घर आ गई थी।

मैं हमारी स्कूल की दीवार पर होकर हमारे खेत पर आ गई थी। मेरी मम्मी खेत पर नहीं थी। वहाँ प्रेमसिंह की मम्मी थी। और दिलखुश था। प्रेमसिंह की मम्मी और दिलखुश घर पर आ गए।

संजना वर्मा, कक्षा–9, उमंग सेंटर दोबड़ा

एक मोटरगाड़ी वाला जा रहा था। मैं डर गई कि यह आदमी मुझे पकड़ेगा। वह मोटरगाड़ी वाला आदमी निकल गया। मैं फिर स्कूल में आ गई और फिर घर चली गई। मैंने मम्मी से कहा कि 'मम्मी मैं तुम्हें बुलाने खेत पर गई थी।' मैंने मम्मी को पूरी बात बता दी।

मम्मी ने कहा कि मैं तो आ गई थी। मम्मी ने कहा कि ऐसे मत जाया करे।

मैं डर गई और फिर कभी नहीं गई।

कोमल गुर्जर, कक्षा 4, समूह–गुलमोहर, गिर्राजपुरा

लकड़ियों के गट्ठर के पास बाघ

यह बात तब की है जब मैं कक्षा 5 में पढ़ती थी। सर्दियों के दिन थे मुश्किल से एक दिन की छुट्टी आई थी। सोचा था कि आज तो दिन में बढ़िया नहाएँगे धोयेंगे और सारे दिन टीवी देखेंगे। हम चूल्हे पर बैठे थे कि मेरी बड़ी बहन मेरी माँ से बोली कि माँ आज तो छुट्टी है। तो हम लकड़ी लेने चलते हैं। माँ बोली–'हाँ चले चलेंगे। पहले चाची से पूछकर आ कि क्या वो भी चलेगी?'

मेरी दीदी चाची के पास गई और उससे पूछा। चाची ने भी हाँ कर दिया था।

उनके साथ मेरे भी जच गई। मैंने कहा–'माँ, मैं भी चलती हूँ।'

माँ ने कहा–'तुझसे कहाँ लकड़ियाँ आएगी। तू रहने दे।'

फिर मैं रोने लग गई तो माँ मुझे भी ले जाने के लिए राजी हो गई।

हम लकड़ियाँ लेने जंगल में चले गए। मुझसे लकड़ियाँ काटना नहीं आता इसलिए मेरी लकड़ियाँ मेरी माँ ने काटी। फिर हम सबने लकड़ियाँ रस्सी से बाँध ली।

सबसे पहले माँ ने मेरी लकड़ियाँ बाँधी। और कहा कि मैं और तेरी दीदी लकड़ियाँ बाँधते हैं। तब तक

तेरी लकड़ियों को थोड़ी नीचे तेरी चाची की लकड़ियों के पास रख आ। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो तब तक चाची भी हमारे पास आ गई थी। मैंने कहा–'माँ! चाची तो आ गई। अब मैं कैसे लकड़ियों को लेकर जाऊँ। मैं तो रास्ता भी नहीं जानती।'

चाची बोली–'ये रास्ता जा रहा है। यहीं थोड़ी आगे मेरी लकड़ियाँ रखी हुई है, तुझे दिख जाएगी। जा चली जा।'

मैं लकड़ियाँ लेकर चली गई और चाची की लकड़ियों तक भी पहुँच गई। तब मैंने सोचा कि थोड़ी और आगे रख आती हूँ, नीचे सही रास्ता है। फिर मैं पहाड़ी ढलान में नीचे तक गई और लकड़ियाँ रख आई। और वापस माँ के पास पहुँच गई। माँ ने भी लकड़ियाँ बाँध ली थी। वह भी आ रही थी।

वहीं पास में एक छोटा सा तालाब था। हम नीचे आने ही वाले थे कि उस तालाब की तरफ से एक बाघ आया। वो मेरी लकड़ियों के गट्ठर के पास से गुजरा। हम थोड़े ऊपर थे और उसे वहीं से देख रहे थे। वो रास्ते के उस तरफ जा रहा था जिधर बकरियाँ चर रही थी। हम थोड़ी देर वहीं रुक गए। और जब वो काफी दूर चला गया तब हम वहाँ से आगे बढ़े। मैंने अपनी लकड़ियाँ सिर पर रख ली। और यह सोचते सोचते चलने लगी कि अगर थोड़ी देर बाद यहाँ से गई होती तो आज ये बाघ मुझे खा ही जाता। लेकिन मैं बच गई और सही सलामत घर पहुँच गई।

खुशी हरिजन, कक्षा–6, बोदल, सवाईमाधोपुर

चित्र–अनुप मीणा, छात्र, फैलोशिप सेंटर जगनपुरा

अमरूद का बगीचा

हमने प्लान बनाया कि अमरूद के बगीचे में अमरूद लेने जाएँगे। हमने बगीचे की दीवार कूदी। मुझे अरिशा ने दीवार से कुदाया था। जब मैं बगीचे में कूद गई तो अरिशा ने मुझे अमरूद लाने के लिए कहा। मैंने अमरूद तोड़े। अमरूद तोड़ के वापस आई तो मुझसे दीवार पर नहीं चढ़ा गया। अरिशा ने हाथ पकड़कर मुझे चढ़ाने की काफी कोशिश की। पर मैं नहीं निकल पाई। बगीचे में ही रह गई।

फिर अरिशा ने कहा–'तू मुझसे नहीं निकल पाएगी। मैं दीदी को बुलाती हूँ।'

मैंने अमरूद तो अरिशा को सौंपाए और फिर चढ़ने की बहुत कोशिश की पर मैं नहीं निकल पायी। आखिर अरिशा को दीदी को बुलाना ही पड़ा। दीदी ने और अरिशा ने मिलकर मुझे खींचा, तब मैं दीवार से निकल पाई।

पहले मैं और अरिशा ही अमरूद खाने वाले थे। अब हम तीनों ने मिलकर अमरूद खाए।

सोनम बानो, कक्षा 9

रेनी, उम्र–9 वर्ष, समूह–रंगोली (पुराना चित्र) वर्ष 2010

भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1

बूढ़ी भैंस कराड़ो माथौ
सींग पकड़तां ही अड़्ड़ाटौ।

2

होयो उजाड़ौ बोली बम
नीचै छतरी ऊपर खम्भ।

3

सोने का पलंग नहीं
ना ही महल बनाए
एक रुपया पास नहीं
फिर भी राजा कहलाए।

4

बूझो भैया एक पहेली,
जब काटो तब नई नवेली।

5

हटाऊँ तो हटे नहीं
काटूँ तो कटे नहीं।

प्रस्तुति – रोहित महावर।

बरसाना गुर्जर, कक्षा–5, फैलोशिप सेंटर बाढपुर

चुटकले

1

चोर ने एक आदमी को बाजार में घेर लिया।

आदमी – मुझे घर जाने दो।

चोर– जेब में जितना भी पैसा है चुपचाप निकाल के दे दो।

आदमी – भाईसाहब जेब तो खाली है, कहो तो पेटीएम कर दूँ।

2

जज – घर में मालिक के रहते तुमने चोरी कैसे की ?

चोर – जज साहब, आपकी अच्छी नौकरी है, अच्छी सैलरी है, आप ये सब सीखकर क्या करेंगे।

3

टीचर – 15 फलों के नाम बताओ।

छात्र – आम, अमरूद, अंगूर और एक दर्जन केले।

4

छोटू – पापा मुझे बाजा दिला दो।

पापा – नहीं। तुम सबको तंग करोगे।

छोटू – नहीं करूँगा। सब सो जाएँगे उसके बाद ही बजाऊँगा।

5

एक भुलक्कड़ आइने में देखते हुए सोच रहा था–इसे कहीं देखा है।

याद आने पर खुश होते हुए बोला– 'अरे ये तो वही है जो रविवार को मेरे साथ नाई की दुकान पर कटिंग करा रहा था।'

बात लै चीत लै

बंजारा समुदाय में प्रचलित दो लोककथाएँ

राजा की बकरियाँ

एक राजा था। एक रोज राजा ने कहा–'चार बकरियाँ हैं मेरे पास। इन बकरियों को जो चरा के, धपा के लाएगा, उसे अपना आधा राजपाट दे दूँगा।'

एक ने कहा कि 'मैं चरा के लाऊँगा आपकी बकरियाँ।'

'बढ़िया!' राजा ने कहा–'जाओ चारा के लेके आओ बकरियों को।'

वह आदमी बकरियों को लेकर जंगल में चला गया। शाम को चराकर ले आया। बोला–'लो राजा साहब आपकी बकरियाँ धपाकर ले आया।'

राजा साहब बोले–'ऐसे नहीं मानूँगा। इन्हें झाड़ के पत्ते डालो। देखें खाती है कि नहीं खाती।'

सपना राजावत, शिक्षिका, उमंग सेंटर श्यामपुरा

बकरियों से सामने झाड़ के पत्ते डाले गए। बकरियाँ उनको चबाने लग गई।

राजा बोला–'डालो इसे जेल में। झूठा कहीं का। कहता है बकरियों को धपा कर लाया है। ये तो अभी भी चारा चर रही हैं।'

तब एक दूसरा आदमी बोला–'राजा साहब मैं चराकर लाऊँगा आपकी बकरियाँ।'

'बढ़िया!' राजा ने कहा–'जाओ चारा के लेके आओ बकरियों को।'

वह आदमी बकरियों को लेकर जंगल में चला गया। शाम को चराकर ले आया। बोला–'लो राजा साहब आपकी बकरियाँ धपाकर ले आया।'

राजा साहब बोले–'ऐसे नहीं मानूँगा। इन्हें झाड़ के पत्ते डालो। देखें खाती है कि नहीं खाती।'

बकरियों से सामने झाड़ के पत्ते डाले गए। बकरियाँ उनको चबाने लग गई।

राजा बोला–'डालो इसे जेल में। झूठा कहीं का। कहता है बकरियों को धपा कर लाया है। ये तो अभी भी चारा चर रही हैं।'

तब एक तीसरा आदमी गया। फिर चौथा फिर पाँचवा। कोई बीस आदमी गए। सबके साथ राजा ने वही हुआ। बकरियों को चारा डाला जाता। वे चबाने लगती और उन आदमियों को एक एक कर सबको जेल में डाल दिया गया।

तब एक इक्कीसवाँ आदमी बोला–''मैं चरा के लाऊँगा आपकी बकरियाँ। मुझे ज्ञान है कैसे चराते हैं बकरियों को।'

उसने एक डण्डा उठा लिया और बकरियों को लेकर जंगल में चला गया।

शाम को बकरियों को राजा साहब के सामने पेश करके, उनके बगल में बैठ गया डण्डा लेकर। राजा साहब ने फिर वही चारा डलवाया बकरियों के आगे। वह आदमी डण्डा बजाने लगा जोर जोर से। बकरियाँ बिदकर दूर हो गई। एक ने भी चारे को मुँह नहीं लगाया। राजा मान गया कि 'हाँ! तुम चराकर धपाकर लाए हो बकरियों को। तुम मेरे आधे राजपाट के हकदार हो।'

वह आदमी बोला–'मुझे आपका राजपाट नहीं चाहिए राजा साहब।'

'तो तुम्हें क्या चाहिए?' राजा साहब ने पूछा।

'मुझे कुछ नहीं चाहिए।' उस आदमी ने कहा। आप बस इतना कर दो कि जिन बेकसूरों को आपने जेल में डाला है, उन्हें छोड़ दो।'

राजा को उस आदमी पर बड़ा अचरज हुआ। जो राजपाट छोड़कर जेल में डाले हुए लोगों को छोड़ने की बात कह रहा है।

राजा ने उसकी बात मानकर सबको जेल से रिहा कर दिया।

प्रस्तुति – **शंभू बंजारा**, 25 वर्ष, बानीपुरा, खण्डार।

पुनर्लेखन – प्रभात

मनीषा बैरवा, फैलो, फैलोशिप सेंटर कटार

सियार का न्याय

एक घोड़ी वाला अपनी घोड़ी के साथ कहीं जा रहा था। रास्ते में एक सियार भाई बैठा था। सियार भाई ने कहा – 'भाई राजा रामराम।'

घोड़ी वाले ने मुँह फेर लिया। सियार भाई की राम राम का जवाब ही नहीं दिया। वह अपने रास्ते चलता रहा। चलते चलते आगे उसे रात हो गई। तो एक गाँव था। उस गाँव में एक तेली रहता था। वह उसके यहाँ रुक गया। तेली के घर पर तेल निकालने का घाणा (लकड़ी की मशीन) था। उसने तेली के घाणे से घोड़ी को बाँध दिया।

रात में सब सो गए। उसी रात में घोड़ी ने एक बछेरे को जन्म दिया।

भोर होने से पहले अँधेरे में तेली जाग गया। उसने घाणे के पास घोड़ी के साथ बछेरा देखा तो चकरा गया। विचार करने पर उसे बात समझ में आ गई। उसने विचार किया कि घोड़ीवाला तो केवल घोड़ी ही लेकर आया था। वह सिर्फ घोड़ी ले जा सकता है, बछेरा नहीं।

सुबह होने पर तेली ने सारे गाँव में गुड़ बँटवा दिया।

'ये किस खुशी में ?' किसी ने पूछा तो उसने बताया–'घाणी ब्यायी, बछेरा ले आई।'

यह देखकर घोड़ी वाला परेशान हो गया। वो बैठा–बैठा ध्यान लगा रहा था कि घोड़ी तो अपणी ब्यायी थी। तेली ने ये क्या किया कि कह दिया घाणी ब्यायी। ये क्या तरीका हुआ?'

इस बात के फैसले के लिए गाँव वालों को इकट्ठा किया। पंचों में फैसला हो जाएगा। पंचों ने कहा–'घाणी के बछेरा हुआ है तो बछेरा तेली का ही है क्योंकि घाणी उसी की है।'

घोड़ी वाला ध्यान लगाने लगा कि फिर पंचायत बैठानी पड़ेगी। मुझे अपना पंच लेकर आना होगा। वह पंच की तलाश में निकल पड़ा। रास्ते में उसे वही सियार मिला।

उसने सियार से कहा–'सियार भाई रामराम।'

सियार ने मुँह फेर लिया। कोई जवाब नहीं दिया।

उसने सियार से फिर कहा–'सियार भाई रामराम।'

सियार ने इधर से मुँह को उधर फेर लिया।

नमन माली, कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

आखिर में उसने कहा–'सियार भाई ऐसा मत करे। आज मेरा एक काम पड़ गया है। अगर काम निकाल देगा तो बढ़िया रहेगा।'

सियार भाई ने उसकी बात सुन ली। पूरी बात सुनने के बाद सियार भाई बोला–'मेरे को यहीं से कंधे पर बैठाकर ले चले तब मैं गाँव में चलूँ। गाँव में ले जाकर आदमियों के बीच छोड़े तो ही चलूँ क्योंकि गाँव में कुत्ते मुझे मार देंगे।'

घोड़ी वाले ने ऐसा ही किया। सियार भाई को कंधे पर बिठाकर ले गया। गाँव में पंचायत में सबके बीच में पहुँचकर ही उसे कंधे से उतारा।

पंचायत में बैठा बैठा सियार गर्दन झुकाकर नींद लेने लगा।

पंचों ने कहा–'सियार भाई आँख बंद करके सोओ मत। न्याय करो। मामले को सुलझाओ।'

सियार बोला–'अरे पंचो मामला क्या सुलझाऊँ। समंदर में आग लग गई थी। मैं रातभर वो आग बुझाता रहा। इसलिए नींद आ रही है।'

'हट झूठा।' सारे पंच एक साथ बोल पड़े।

'झूठे तुम सब। लकड़ी के घाणे से कोई बछेरा पैदा होता है ?' सियार भाई ने कहा तो सबकी बोलती बंद हो गई।

सियार भाई के न्याय को सबने माना। घोड़ी का बछेरा घोड़ी वाले को दिया। तेली देखता रह गया।

घोड़ी वाले ने घोड़ी और बछेरे को साथ में लेकर सियार भाई को वापस उसकी जगह पर पहुँचा दिया।

प्रस्तुति – **हजारी बंजारा**, बंजारा बस्ती, बानीपुरा, खण्डार।

पुनर्लेखन – प्रभात

मनीषा बैरवा, फैलो, फैलोशिप सेंटर कटार

पीछे रह गए खेत

गाँव के चरवाहे छूटे, पीछे रह गए खेत
मरूधरा पर उड़ रही झीनी झीनी रेत।

उड़ती झीनी रेत नीम की छाया छूटी
फोपारिया का साग बाजरी रोटी छूटी।

आषाढ़ मास में खेत बुवायी करने जाते
हल चलाते, तेजा गाते, काँदा रोटी खाते।

भादौं के महीने में खेत नींदाणी करने जाते
कभी खेत में बनी झोंपड़ी में सो जाते।

गरज गरज कर मेघ बरसते खूब नाचते मोर
खेजड़ी के खोका खाते बेरड़ियों के बोर।

आसोज मास में बाजरी के सिट्टे पक जाते
कातिक मास में खेत में मोठ उपाड़ने जाते।

मीरा गाड़िया लुहार, शिक्षिका, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

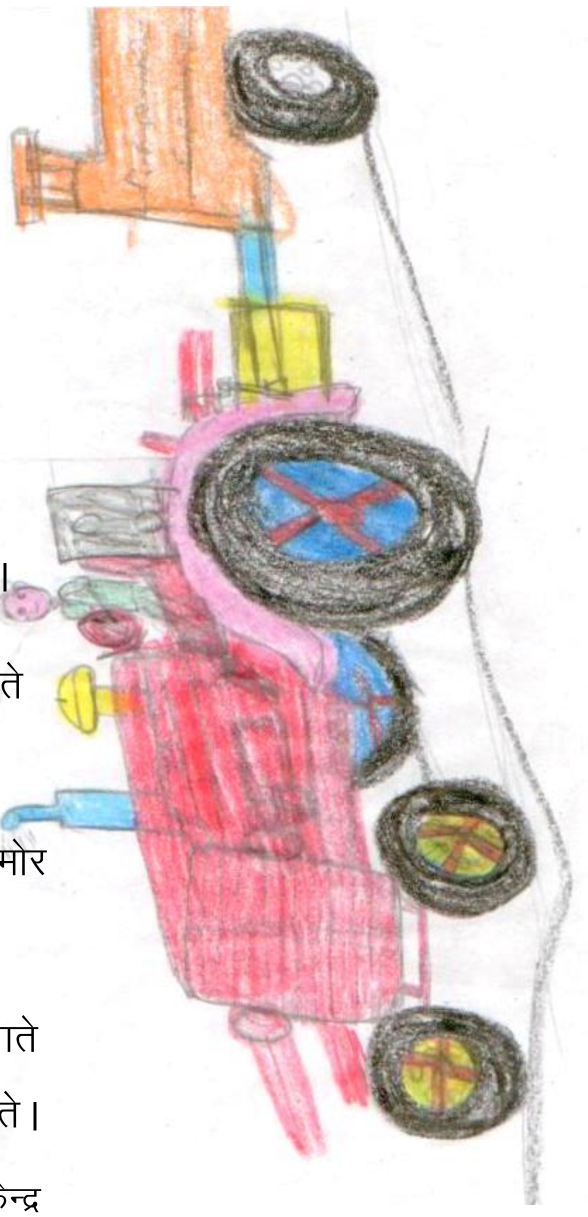

जियालाल, समूह–वीर शिवाजी (पुराना चित्र)

पूजा बैरवा, फैलो, फैलोशिप सेंटर बोदल

पहेलियों के जवाब –

1. घट्टी / चक्की 2. रई बिलौणी 3. शेर 4. पेंसिल 5. परछाई

पायल बैरवा, फैलोशिप सेंटर हिम्मतपुरा